''कर्म धर्म पाखण्ड जो दीसें तिन जम जागाती लूटें''

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश फरवरी, 1972 में प्रकाशित प्रवचन)

इतवार, 2 जनवरी के इस सत्संग में जो सावन आश्रम में हुआ, श्री हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के वक्तों के प्रभुख सत्संगी भाई श्री लूंबा जी और श्री अमरसिंहजी ओबराय ने श्री हजूर महाराज की पूरानी यादों को अपने प्रवचनों में ताज़ा करते हुए अपने निज अनुभवों के रोचक दृष्टान्त प्रस्तुत किए। श्री लूम्बा जी ने कहा कि श्री हजूर महाराज की वही अमर ज्योति, बल्कि स्वयं हजूर महाराज ही श्री सत्गुरू कृपालसिंह जी महाराज में बैठकर काम कर रहे हैं , जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण हरेक परमार्थाभिलाषी को, जो उनके पास आता है ज्योति और नाद की नक़द पूंजी मिलने अर्थात् व्यक्तिगत रूप से हरेक दीक्षित को व्यक्तिगत अनुभव के रूप में मिल रहा है। श्री लूंबा और श्री ओबेराय के प्रवचनों के बाद सत्गुरू कृपालसिंह जी महाराज ने अपना सत्संग प्रवचन श्री हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के जिक्र से इन शब्दों में शुरू किया —

ऐसी शक्तियों का ज़िक्र किस ज़बान से हो सकता है ? जितना बयान करोगे, छोटा ही करोगे ''तू सुलतान कहां हों मियां तेरी कौन बड़ाई।'' वह यह सब कुछ भी है, कुछ और भी है, जिसको हमने अभी समझा नहीं। वह झलकियां देता है, अपने जीवों को आप चिताता है। और किसी-किसी को इस चीज़ का पूर्ण अनुभव करा देता है। ये उसकी बख़शिश है, उसका नमूना हो नहीं सकता। बाहू साहब कहते हैं, कि इस जिस्म के जितने रूएं (रोम) हैं, इतनी आंखें बन जाएं, बल्कि एक-एक रोम की सौ-सौ आंखें बन जाएं, और उतनी ही जबानों से फिर उसकी तारीफ करो, फिर भी बयान नहीं हो सकता। ऐसी हस्तियां आया करती हैं दुनियां में, कभी-कभी। अपना रंग दे जाती हैं। जिन पर उनकी नज़रे-शफ़कत (प्रेम की दृष्टि) पड़ती है, बेड़ा पार हो जाता है। तो मेरे अर्ज़ (निवेदन) करने का मतलब, कई पुरूष होते हैं — एक महापुरूष होते हैं, एक सत्पुरूष होते हैं। वह जन्म-मरण में नहीं होते।

जन्म मरण दोऊ में नांहि जन पर उपकारी आए।

परोपकार की खातिर आते हैं। जो परमात्मा से बिछुड़े हुए हैं, उससे (उनको) मिलाते हैं। कैसे मिलाते हैं ? हर कोई, किसी को कपड़े का दान देता है, रूपये का देता है, हर तरह से देता है, मगर अपनी जान का दान नहीं। वह (महापुरूष) क्या करते हैं ?

जियादान दे भक्ति लायण हर स्यों लैन मिलाय।

उनकी जान क्या है ? Word made flesh (शब्द जो संदेह हो गया) '' गुरू में आप समोये शब्द वरताया'' वह उसकी जान है (शब्द)। ''शब्द वरताया।'' वह अपनी जान देता है। तो जो मुजस्सम (शब्द संदेह) होगा, वही उसके अन्तर भी बैठा है, प्रगट कर सकेगा। बात तो यह ही है। वह हरेक से काम लेगा। महापुरूष आए। किस ज़माने में वह आते रहे, ये बात ख़ास समझने वाली है। महापुरूष आए दुनियां में समय-समय पर, जो उनसे मिले — क्योंकि वह परमात्मा उनके अन्तर प्रगट होता है, है तो सब में, पर उसमें प्रगट है, वह प्रगट हुआ परमात्मा ही दूसरों को भी उसके साथ जोड़ सकता है। **जिसका दीवा जगता है, जगा हुआ दीवा ही दूसरे (दीवे) को भी जगायेगा। ये (महापुरूष) कभी-कभी आया करते हैं। जो-जो उनसे मिलते हैं, उनका सिलसिला बन जाता है। जब वह शरीर छोड़ जाते हैं, उस तालीम को ताजा रखने के लिये ये हमारे स्कूल-कॉलेज (समाज) बने हैं। ये बड़े Noble Purpose (उच्च उद्देश्य) से बनाए जाते हैं। तो आमिल (अनुभवी) लोग जब तक रहे, काम बनता रहा। जब आमिल लोगों की कमी हो जाती है, लकीर की फ़कीरी हो जाती है। लोग उनको समझाने का यत्न करते हैं, मिसालें (उदाहरण) दे-देकर, बाहर नमूने बना-बनाकर। जब आमिल लोग नहीं रहते, लकीर की फकीरी रह जाती है। The same good old custom corrupts itself (वही चीज़ जो एक ऊंचे उद्देश्य से बनायी गई थी दूषित हो जाता है) Formations (समाजें) जो बड़े Noble Purpose (उच्च उद्देश्य) से बनाई गयी थीं — They result in stagnation. And stagnation results in deterioration. (उनमें रूकाव आ जाता है, गतिरोध हो जाता है, जिससे गिरावट आ जाती है)।** फिर महापुरूष आते हैं, अरे भाइयो, तुम भूल में जा रहे हो। ये जितनी समाजें नज़र आती हैं, बड़े Noble Purpose (उच्च उद्देश्य) से बनाई गई थीं, आमिल (अनुभवी) लोगों की कमी से वही आज हमारे कैदख़ाने बन गए हैं। वह तुमको इससे Free करने के लिऐ आते हैं, Freedom (आज़ादी) देने के लिए आते हैं। जो मिसालें, जो नमूने, बाहर रौ-रीतें (रीति-रिवाज) बनाते हैं, जिस Ground (भूमि) पर वह मबनी (आधारित) हैं, उसको समझाते हैं भाइयों, ये बात है, तुम दो नहीं, हम दो नहीं। सब एक हैं। उसीका (प्रभु का) इज़हार (अभिव्यक्ति) है। तो जबसे Paid (वैतनिक) प्रचार शुरू हुआ, हरेक समाज में अधोगति हो गयी। वे (पूर्ण पुरूष) क्या कहते हैं ? जब ऐसी तंग दिली, तंग नज़री दुनियां में ज़ोर पकड़ती है तो ऐसे महापुरूष आते हैं। गुरू नानक, कबीर साहब, उस ज़माने में आए जब दो कौमें बड़ी प्रबल थी, तंगनज़री, तंगदिली का नमूना थे। पेश किया कि भई तुम कौन हो ? कहते हैं भई, हम तो सब एक हैं। न हिन्दू हैं, न मुसलमान हैं, न सिख हैं, न ईसाई, न बोधी हैं, न जैनी हैं।

ये तो बाहर लेबल लगाए हैं।

आई पंथी सकल जमाती मन जीते जग जीत।

मन हमारे दरम्यान खड़ा है, जिस खातिर हम इसमें जा रहे हैं, इस सिलसिले में। ''मन जीते जग जीत।'' किसी समाज में रहो। बाहर नमूने बनाऐ थे। जैसे लड़कियां होती हैं ना, छोटी उम्र में ब्याह-शादी की रस्में सीखती हैं, गुड्डी-गुड्डे समझने के लिए हैं। अगर असलियत नहीं समझ आई तो लकीर की फकीरी है। इसी का नाम भूल है, इसी का नाम माया है। तो वह (महापुरूष) इस चीज़ को समझाने आते हैं। ''कहु कबीर इह राम की अंश। '' हमारी ज़ात वही है जो परमात्मा की ज़ात है। हम और नहीं, वह और नहीं। मगर देहधारी है। सब में बैठा है। वह (प्रभु) कहां रहता है ? जो घर उसने (प्रभु ने) बनाया। ये घर किसने बनाया जी, माता के गर्भ में ? उसने बनाया ना ! उसमें खुद बैठा है। मानुष देह सबसे श्रेष्ठ है, Highest rung in creation है। देवी-देवता भी उसको (मानुष देह को) पाने के लिए तरस रहे हैं, जो हमको मिल चुकी है। इसमें उसको (प्रभु को) पाना था। जब आमिल (अनुभवी पुरूष) मिल गया तो Direct (सीधा) दे दिया। आमिल लोग, महापुरूष, पूर्ण पुरूष, क्या करते हैं ? मिसालें देते हैं। कई तो Direct Talk (सीधी स्पष्ट बात) करते हैं, कई Parable (दृष्तान्त) से समझाते हैं। Parable का मतलब है जो Less Developed हैं (मानसिक तौर पर कम विकसित या मोटी अक़ल के लोग हैं) वह बात समझ जाएं। बात तो इतनी है। Direct बात ये है, We are all brothers in God आत्मा प्रभु की अंश है। वह (प्रभु) हमारा सबका जीवनाधार है, घट-घट वासी है। उसीको पाना है और मानुष देह में ही पाना है।

तो हम क्या करते हैं ? ये उनकी तालीम है जिन्होंने उसको (प्रभु को) जाना है और लोगों को इस भूल से निकालते हैं। हम बड़ी भारी भूल में जा रहे हैं। हम क्या समझते हैं ? तुम कौन हो ? जी पहले मैं हिन्दू फिर हिन्दोस्तानी, फिर इंसान। पहले कौन ? मैं पहले मुसलमान हूं और फिर ? मैं पहले ईसाई हूं और फिर ? अरे ईसाई, हिन्दू, मुसलमान, पीछे बने, पहले इंसान बने। ''मानस की जाति सब एके पहिचानिबो।'' ये बाहरी सिलसिले जितने बने हैं, रस्मों-रिवाजों के, किस पर Based (आधारित) हैं ? बाहिर मन्दिर बनाए समझाने के लिऐ लोगों को, गुंबददार शकल इंसानी माडल (इंसान के नमूने) बनाए, उनमें ज्योति भी रखी, नाद का चिह्न भी रखा, Light and Sound. हम उसकी बड़ी कद्र करते हैं। मगर आपको पता है ये नमूना किसका है ? ये बताने के लिए कि ये तुम्हारा शरीर है जिसमें गुबंददार शकल के ऊपर Dome (कलश) लगाए और इसमें ज्योति का प्रकाश है उसका (प्रभु का)। ''ज्योति हूं प्रभ जापदा।'' और उसमें नाद हो रहा है, नमूना बनाया था

समझाने बुझाने के लिए कि ऐसी ज्योति, ऐसा नाद तुममें हो रहा है। मगर आमिल लोगों की कमी से होश नहीं (लोगों को)। नतीजा क्या है ?

काज़ी रूकनुदीन ने गुरू नानक साहब से पूछा, तुम बड़े फ़कीर हो। तुमने खुदा का घर देखा होगा। कहते हैं, हां देखा है। फिर खुदा के घर का बयान किया है कि उसमें 12 बुर्ज हैं, जोड़ हैं, तीन-तीन छह (हाथ पांव के) और छह बारह। उसके बावन किंगुरे हैं, बत्तीस दांत और बीस नाखून। उसमें दो बारियां (खिड़कियां) लगी पड़ी हैं, दो आंखें। ''उच्चे ख़ासे महल दे बांगां दये खुदा।'' तो Body is the Temple of God. ''इह शरीर हरि मंदिर है जिसमें सच्चे की ज्योति।'' इस शरीर में जिसमें हम रह रहे हैं । और मानुष देह ही में हम उसको पा सकते हैं। मगर हमने क्या किया, बाहर जो नमूने बने थे (इस मानव शरीर के) समझाने बुझाने के लिए, वह हमारे माबूद (पूजास्थान) बन गए, इतने प्यारे हो गए हमें, आप समझते ही हो, कहीं किसी मन्दिर का किंगुरा उड़ जाए, गिरजे का किंगुरा उड़ जाए, मस्जिद का ज़रा गड़बड़ हो जाए तो ऐसे हजारों मस्जिद, गिरजे (मानव शरीर के) हम कुरबान कर देते हैं। अरे भाईयो ये कहां की अकलमन्दी है ! खुदा ने ये (मानव शरीर) रहने को अपना मकान बनाया था। हमने उसको निकाल कर बाहर नमूने बना दिए। इसके (खुदा के) नमूने उसमें बिठा दिए। तो महापुरूष आते हैं, अरे भाइयो ! तुम प्रभु की अंश हो। चेतन स्वरूप आत्मा हो। मेरी अंश हो। देहधारी हो। भागों से ये मानुष देह मिली है। इसी में तुम उसको (प्रभु को) पा सकते हो। सब रस्मों-रिवाजों की तह में जो बात है वह पेश करते हैं। तो गुरू नानक साहब, आपको पता है, कहां कहां नहीं गए। तीर्थों पर गए, मन्दिरों में गए, बोधों से मिले, ब्रह्मणों से मिले, लामाओं से मिले उत्तर में, बंकाक और पूर्व में वहां तक गए जहां कहते थे जब वहां मरते थे, लोग खुशी करते थे। दक्षिण में संगलाद्वीप तक गए। अफ़गानिस्तान, बलोचिस्तान, ईरान मक्के-मदीने तक गए, जहां अब भी उनका थड़ा मौजूद है। एक सत्संगी भाई वहां गया, मैंने उससे कहा, भई वह थड़ा जो बना है वहां (मक्के में गुरू नानक साहब का) उसको पक्का करके आ जाना। यरूश्लम तक गए, तुर्की तक गए और मिस्त्र तक गए। कहां गए — जो धर्मों के मठ बने थे उनमें गए। सिर्फ पेश की, जो असल बात है। मुसलमान कौन ? जो मोमिन है। जिसने परमात्मा को पाया है। हिन्दू कौन ? जो ज्योति को पा जाए। सिख, दसम गुरू साहब ने साफ़ कह दिया, जो खालसा हो, और खालसा कौन ? जिसमें पूर्ण ज्योति जगे। हम सब पूर्ण ज्योति के पुजारी हैं। ''जागत ज्योति जपे निस बासर।'' We are all children of Light (हम सब उस परम् ज्योति की सन्तान हैं) उसको पाने के लिए ये मानव देह मिली थी। ये सब रस्म-रिवाज पीछे बनाए गए, खास मतलब के लिए बनाए गए। इनकी कीमत, हजूर हमारे (श्री हजूर

बाबा सावनसिंह जी महाराज) फरमाया करते थे, भई जितनी कीमत है (किसी चीज़ की) उतनी कीमत उसे अदा करो। सोने को सोना कहो, पीतल को पीतल कहो, लोहे को लोहा कहो। कीमत हरेक की है। और जितने कर्म-धर्म बनाए गए ये उसके समझाने बुझाने के लिए बनाए गए थे। ये नेक कर्म थे, ज़मीन की तैयारी के लिऐ थे, उसमें आना-जाना बना रहेगा। आना-जाना कब खत्म होगा ? जब उसको (प्रभु को) अन्तर में प्रगट कर लोगे। मरते हुए दीवा मनसाते हो, मुआफ़ करना। जीते-जी दीवा मनसाओ, नहीं तो बेगते मर जाओगे। वह (महापुरूष) भूले हुए जीवों को जगा देते हैं। यह निशानी है। अभी पढ़ रहे थे ना बाणी — ''कोई ऐसा सतगुरू सन्त कहावे, नैनों अलख लखावे।'' बड़े साफ़ लफ़्ज़ हैं। किसी का लिहाज़ नहीं करते। और जब तक —

So long as you do not see with your eyes you do not believe me.

(अर्थात् जब तक तुम अपनी आंखों से न देखो, मेरे कहे पर भी यक़ीन न करो)। तो Highest Creation ऐसे महापुरूष की पूर्ण पुरूष की क्या हो सकती है ? उसकी (प्रभु की) ज्योति है तो सबमें। मगर ढकी पड़ी है, मन इन्द्रियों के घाट पर, स्थूल, सूक्ष्म, कारण के गिलाफ़ों (आवरणों) में, जो इस (जीव पर से) बोझ उतारकर (कर्मों का) थोड़ी पूंजी दे दे, उसी का नाम साधु, सन्त है। जाओ ढूंढो, कहां मिलती है ? जितने ज्यादा हों खुशी की बात है। देने वाले लाख मिल जाएं, लेने वाले दो भी न मिलें। बात समझ रहे हो ? Commission (परमात्मा की ओर से पर्वानगी) होती है। ऐसे समय में जब गुरू नानक, कबीर साहब आए, उस वक्त दो समाजें प्रबल थीं। आज कल सात सौ कितनी समाजें हैं। आज बड़ी भारी जरूरत थी हजूर की।

मुझे याद है, एक दफ़ा आर्य समाजी भाइयों ने हजूर से कहा, अर्ज़ की, कि महाराज, आप एक नया मज़हब बना लो। कहने लगे, कुंए आगे बड़े लगे पड़े हैं, और कुंआ लगाने की क्या जरूरत है ? विश्व धर्म सम्मेलन में मैंने जो Talks दीं, मैंने Quotations (धर्म ग्रन्थों के उद्धरण) दी हैं, असल तालीम यही है, Light and Sound (ज्योति और नाद)। This is the basic natural yoga (यह आधारभूत, प्राकृतिक योग है) बाकी सब (सारे योग) पीछे बने। तो कहा, कुएं आगे ही बहुत लगे पड़े हैं, और कुंआ लगाने की क्या ज़रूरत है ? कहने लगे, सबको एक जैसे हकूक (अधिकार) हैं। हमारी संगत में अमीर-गरीब, जहां चाहे बैठ जाए। तो कहने लगे (आर्य समाजी भाई) कि लंगर एक कर दो। कहने लगे, हां लंगर हम जरूर एक कर देंगे। बनाते एक ही जगह हैं। बांटने के लिये, जो राजपूत भाइयों से नफ़रत करते हैं (कुलीन) इसलिये उनको अलेहदा खिला देते हैं। बनता एक ही जगह है (खाना)।

यह नफरतें तुम दूर कर लो। हमारा आगे ही एक है सत्संग। फिर वह कहते थे, ऐसी कामनाग्राउंड (साझी ज़मीन) बने, जिसका नाम भी उन्होंने ही तजवीज़ किया, रूहानी सत्संग बना लो, कालिज बना लो। यह उनही की बरकत है सारी।

तो आपको मालूम है ऐसे महापुरूष कब आते हैं ? जब दुनियां में अन्धेर गरदी मच जाती है। रस्मों-रिवाजों में महव हो जाते हैं। उसी में मरना कबूल कर लेते हैं। मैं एक बात आपको सुनाऊं ? लाहौर का ये वाकिया (घटना) है। एक डॉक्टर राजरसन थे वहां, उसके साले थे। वह गिरजे में जाया करता था। वहां सुना कि जब तक तुम मरो नहीं, तब तक वह मिलता नहीं (अमर जीवन) Learn to die so that you begin to live अब जो Preachers (प्रचारक, पादरी) थे वहां, वो कहते थे मरने ही से प्रभु मिलता है। उस बिचारे ने सुना, मरने ही से प्रभु मिलता है, क्या किया उसने, एक गिलास शराब का भर लिया, उसमें अफ़ीम डाल ली, पी गया, ''हे प्रभु ! मैं तेरे पास आ रहा हूं।'' ये लकीर की फ़कीरी है। भूल होती है हमेशा Preacher (उपदेशक) से। अगर समझाने वाले की आंख खुली है तो वह खोलेगा, नहीं तो वह (सत्य) दरपर्दा ही रहेगा। मुझे याद है, एक महापुरूष थे, उनको ऐसा Initiate (शिष्य) मिला। उसने कहा, भाईयो, Direct (साफ़ सीधे) क्यों नहीं कहते, सत्य ये है, और उसके अन्तर में है, या तुम्हारे अन्तर में है ? वह कहने लगे, बाहर से बहुत से लोग आए हैं, वह गुमराह (पथभ्रष्ट) न हो जाएं, ये बातें करने पर ! ये बात नहीं। तो हमारे हजूर (श्री हजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज) ने, खुल्लम-खुल्ला कहा, किसी ऐसे महापुरूष से मिलो जो अन्दर जाने वाला है। ये ख़जाना सबमें है, हिन्दू निकाल ले उसका है, बात समझे हो ? Direct उपदेश। और ये Direct उपदेश कब से चलते हैं ? जब महापुरूष आते हैं। फिर बाद में लकीर की फकीरी से, आमिल पुरूषों की कमी से, उस हालत में, आज कितनी सौ समाजें हैं ? सो ये कामनग्राउण्ड (सब समाजों की सांझी जमीन) है, जहां पर हजूर की तालीम, जो उन्होंने दी, वही अब भी बख़शिश कर रहे हैं। थोड़ी बात तो यही है, कि परमात्मा हमारे अन्तर में है। हम उसको बाहर ढूंढते रहते हैं।

सब किछु घर में बाहर नाहिं। बाहर टोले सो भरम भुलांहि॥

और जब तक किसी को उसका अनुभव नहीं होता, उसकी कल्याण नहीं। गुरू ग्रंथ साहब की आखिरी तुक क्या है ? आपको पता है ? ''हर दरस तिहारो होय।'' हे प्रभु तेरे दशृन हमें नसीब हों। गुरू अमरदास साहब सत्तर-बहत्तर साल की आयु तक तलाश में रहे। हरेक किस्म के साधन करते रहे। मगर, वह कहते हैं, जब गुरू अंगद साहब उनको मिले हैं तो क्या कहते हैं ? ''बिन देखे सालाहना अन्धा अन्ध कमाय।'' बगैर देखे के जो

उसकी सालाहना करनी है, ''अन्धा अन्ध कमाय।'' कोई अन्धा जैसे तारीफ़ करे। ''जब देखा तो गावा। तो गावे का फल पावा।'' अब जितने कर्म-धर्म हम कर रहे हैं, क्या उसको देखकर कर रहे हैं ? नमूने बनाकर, बस। नेक कर्म जरूर हैं। इसकी कीमत है कितनी ? कि नेक का फल नेक, बद का बद। आना जाना बना रहेगा। जब तक Doership (कर्तापने) का, हौंमे का ख्याल जाता नहीं, आना-जाना ख़त्म नहीं होगा। Doership कब जाएगी ? आपको पता है कब जाएगी ? कभी ध्यान किया है ? ''अन्तर ज्योति निरन्तर बाणी साचे साहिब स्यों लिव लाए।'' और, शब्द जब प्रगट होगा, गुरूमुख बनकर तो उसकी (प्रभु की) ज्योति का विकास होगा।

हौमे ममता सबद जलाई, गुरूमुख ज्योति निरन्तर पाई।

जब हौमे न रही तो आए जाएगा कौन ? ये Direct Vision का (बिना किसी माध्यम के स्वयं देखने) का जो सवाल है, अनुभवी पूर्ण पुरूष देते रहे (ये दृष्टि) आगे भी देते थे, अब भी देते हैं। ऐसे महापुरूष दुनियां में रहते हैं। कम से कम उनके नामलेवा रहते हैं, जिनको सबको, ये काम थोड़ा किसी से ले लिया जाए। और वह काम हरेक से ले रहे हैं। ये उनकी (काम करने वालों की) बड़ाई नहीं बल्कि उसकी बड़ाई है जो काम ले रहा है। मेरी बात समझे। यह नई चीज़ नहीं मैंने कहा, ऐसे महापुरूष कब आते हैं ? जब बहुत समाजें बन जाती हैं। Basic (मूलभूत) चीज़ को लोग भूल जाते हैं, एक कहता है ये अच्छा है, वह कहता है वह अच्छा है। ये कोई नयी चीज नहीं। जिसको वह (महापुरूष) Authorise कर जाते हैं (अधिकार सौंप जाते हैं) वही तालीम का सिलसिला चलता है। वह नालियों की तरह काम करते हैं। जितना पानी भेजते हैं, आगे मिल जाता है। अब एक शब्द सुनिये क्या कहते हैं। जबानी जमा-खर्च तो सुना है आपने, अब महापुरूषों की जबानी, ''वली रा वली मी शनासद।'' उड़ने वाले की ख़बर उड़ने वाले दें, जो तालीम है, सही मानो में वही पेश कर सकते हैं, दूसरा नहीं पेश कर सकता। अब गौर से सुनिये वह क्या कहते हैं ? ये बाणी गुरू अर्जन साहब की है जो आपके सामने रखी जा रही है। आपको पता है गुरू अर्जन साहब में बड़ी भारी फ़ज़ीलत (महानता) क्या थी ? उन्होंने, जितनी महापुरूषों की बाणी मिल सकी, सत्पुरूषों की बाणी, वे किसी समाज के थे, सब इकट्ठी कर दी। सबका एक दरजा था। यहां तक, उसी सिलसिले में, जो बुनियाद श्री अमृतसर साहब की रखी गयी, हज़रत मियां मीर से रखवाई गयी। जब भरम दिल का उठ गया, तो कहां का हिन्दू कहां का तुर्की। किसी कॉलेज के पी.एच.डी. बन जाओ, पी.एच.डी. हो तुम। ये बड़ी भारी फ़ज़ीलत (बड़ाई) थी। और नम्रता की क्या हद थी। याद रखो, नीची जगह पानी इकट्ठा होता है, ऊंची जगह नहीं रह सकता है। जब कहीं संगतों ने आना हो, लाहौर से चले, अमृतसर के

दो पड़ाव थे। गुरूमता ये पास हुआ कि आज रात यहां ठहरेंगे और कल रात हम पहुंच जाएंगे अमृतसर। आगे दस-बारह या पन्द्रह मील चलते थे रोज़। अमृतसर लाहौर से कुदरती तीस मील है। जब वह गुरूमता पास हुआ तो एक बच्चा उठा छोटा, क्या हम कल नहीं पहुंच सकते अमृतसर ? बच्चों को उत्साह ज्यादा होता है। सबने गुरमता पास किया कि कल ही पहुंचेगे। सुबह ही उठे, छोटे बड़े, तीस मील सफर करना था, रात के बारह बजे पहुंचे अमृतसर। और गुरू अर्जन साहब का जीवन ? सर्दी के दिन थे। कम्बल ओढ़े हुए सिर पर, प्रशाद तैयार करके आकर, शहर के बाहर ही जाकर अरदास की, सबके पांव धोए। सबसे कहा, ये अरदास करो, मेरी गुरू संग बन आए। खैर ! सबके फिर पांव धोए, अरदास हुई। जब वह चले (संगत) तो वह दूसरे रस्ते से चलकर वहां जा बैठे। लोग कहने लगे, यह वही आदमी मालूम होता है। इतनी नम्रता ? जहां नीचा पानी है, वही जाने कितना पानी है, कितना नहीं। बात तो यह है। जितना गहरा होगा, और नीचे से भी गया Well निकल आता है, जो अपने आप पानी निकालता है, जैसे अब हुआ, वहां पर देहरादून (मानव केन्द्र) में। नीचे पानी फूटकर अपने आप आता है। वहां पानी की बड़ी कमी है। तो मैं ये अर्ज कर रहा था उनकी तालीम है, उनका ये जीवन है। जितना नीचा है उतना ही, और क्या तालीम देते हैं ? यही। लोग जब कर्मों-धर्मों में उलझ जाते हैं, भूल जाते हैं असलियत को, उनको जगाने आते हैं। वह किसी को (समाज या आस्था को) तोड़ने नहीं आते, मगर हकीकत (सत्य) को समझाने के लिये आते हैं। They come to fulfil not to break. अब गौर से सुनिये वह क्या कहते हैं ? जो मैंने अर्ज किया, जो थोड़ी बहुत है उसकी शहादत (गवाही) ही हुई। तो असल मानों में मैंने शायद थोड़ा बयान किया वह ज्यादा कहेंगे। गौर से सुनिये।

कर्म धर्म पाखण्ड जो दीसें तिन जब जागाती लूटें।

कहते हैं कर्म-कर्म किसको कहते हैं ? एक शख्सी (व्यक्तिगत) कर्म का नाम कर्म है। और धर्म किसको कहते हैं ? एक जमात के कर्म का नाम धर्म है। बस। कर्म, कहते हैं, एक आदमी ने जो कर्म किया वह कर्म हो गया। जब एक जमात में कहा भई सुबह उठो, इतने बजे नहाओ, ये करो, वो करो, तिलक लगाओ, जो धर्म समाज का बन गया ना, कानून, वह बन गया धर्म। ये कर्म धर्म बहुत अच्छे हैं, मगर पाखण्ड हैं। पाखण्ड किसको कहते हैं ? कि असल चीज़ कुछ और हो, मगर बताई कुछ और जाए। जो पाने के रस्ते में खण्डन करे, उसी का नाम पाखण्ड है। जो तुमको असलियत से दूर ले जाकर दूसरी तरफ ले जाए, उसी का नाम पाखण्ड है, और उसी का नाम माया है, और भूल है। कहते हैं, जितने कर्म-धर्म हैं — आप अब देखिये जरा, महात्माओं की बाणी बड़ी Brief होती है, थोड़ी, मगर बड़ी

पुरमग्ज (सारगर्भित) होती है। Pregnant with meaning (तथ्यपूर्ण)। तो दो किस्म के हैं, कर्म-धर्म, एक अपराविद्या के, और एक हैं पराविद्या के। अब यहां कर्मों का जिक्र होगा — जप, तप, पूजा-पाठ, रस्म-रिवाज, हवन-दान, ग्रन्थों-पोथियों का पढ़ना-पढ़ाना, गाना-बजाना, सब वेद-शास्त्र जो हैं वह इसमें शामिल हैं (अपराविद्या में)। ये नेक कर्म हैं, Noble Purpose (नेक मकसद) से बनाए गए थे। बाहर ज्योंति जगाई, हिन्दू भाईयों को कहा, ज्योति जगाओ। ज्योति जगाई तो कहा, ऐसी ज्योति तुम में है। ज्योति जगाने को लेकर शुरू हुए थे, ज्योति में बारहमुखी रह गए, अन्तर नहीं जगाई। खालसा वही है, चिन्ह चक्र के लेबल लगाये हैं, मगर खालसे बने नहीं। खालसा तब है जब, ''पूर्ण ज्योति जगे घट में तब खालिस तांहि नखालिस जानो।'' मुसलमान कौन है ? जो खुदा के नूर को देखता है, कलामे-कदीम को सुनता है, वही मुसलमान है। ईसाई वही है जो Light of God को देखता है और Voice of God को सुनता है। भई डिग्री तो सबकी एक है। जिसके लिए ये बाहर नमूने — गिरजे नाक की लंबूतरी शकल के, मस्जिदें माथे की महराब की शकल की, मन्दिर सिर की गुंबददार शकल के, सबमें ज्योति और नाद के चिह्न रखे। ये है असल तालीम। बाहर नमूने बनाए थे समझाने बुझाने के लिए। एक फकीर कहता है, ऐ मुल्ला तू किताबों को अब बन्द कर दे। जिसका ये जिक्र कर रही है, उसके दर्शन कराओ हमें अब। समझे ? ''ज्योति हूं प्रभ जापदा।'' और ज्योति को कौन जपाएगा ? ज्योति स्वरूप आप ही जगाएगा ना। तो कहते हैं, जितने ये ग्रन्थ-पोथियां हैं, सबको ठप करके रख दो। ओ जिसका ये जिक्र करती हैं, उससे मिला दो। पढ़ने से ख्याल ही आता है ना, क्यों भई ? साधन करके ऐसी ज्योति जगाओ, सब कुछ जिक्र आता है। Body is the Temple of God. ''इह सरीर हरि मन्दिर है जिसमें सच्चे की ज्योति।'' जिसमें प्रभु की ज्योति जगमगा रही है। कहते हैं, पढ़ ली ? कि हां पढ़ ली (ग्रन्थ-पोथियां)। अब मेहरबानी करो, उसके दर्शन तो कराओ ना ! उसके दर्शन कैसे होते हैं ? ''ज्योति हूं प्रभ जापदा।'' बस। सच्चा हिन्दू वही, सच्चा मुलसमान वही, सच्चा ईसाई वही और सच्चा किसी समाज में रहो, उसकी (उस समाज की) Basic (मूलभूत) तालीम यही है। अब उसको दिखाने की जरूरत है। सात सौ कितनी समाजें हैं, और हजारों रस्मों-रिवाज हैं, माफ़ करना। जो दिखाने वाला — जिसके अन्तर तड़प है वाकई, जो भूल में है — बात ये है कि लोगों को पता लगना चाहिए कि है, सचमुच में ज्योति है।

दसम गुरू साहब का तीन सौ सालवां दिन मनाया गया था (अभी अधिक समय नहीं हुआ)। मैं भी गया था वहां। उन्होंने छोटी उम्र में बड़ा भारी काम किया, हरेक पहलू से काम किया। मैंने थोड़ी देर में सब कुछ बयान करके आखिर कहा, भई हमें तो बड़ा फ़ख़र (गर्व)

है ऐसे महापुरूषों पर, जिसने सबसे पहले कहा, **''मोहि दास तवन का जानो। या में भेद न मूल पछानो। मैं हूं परम पुरख को दासा। देखन आये जगत तमासा। जो मोको परमेस्वर उचरें। सो सब नर्क कुण्ड में परिहें ।''** कितनी भारी Open बात है ? महापुरूष आए, उन्होंने अपना नाम जपाया। जिसने उसको बनाया वह तो बाहर रह गया, माफ़ करना। अकबर बादशाह था, या कौन था। बाहर जंगल में शिकार को गया। वहां उसको प्यास लगी। तो बाग था, (बाग वाले ने) अनार का या कोई और फल था, उसका रस दिया। पिया। उसको अंगूठी दे आए कि अगर तुम कभी शहर में आओ तो ये अंगूठी दिखाकर मुझे मिल लो। तो ऐसे ही हुआ। उसको, जंगल वाले को, शहर में आने का इत्तेफाक (संयोग) हुआ। उसने कहा, चलो बादशाह से मिल आएं। गए बादशाह के महल में। वहां बादशाह बैठा था नमाज़ में ''ए खुदा मुझे दे, मैं लोगों को दूं।'' वापस आ गया। कहा (बादशाह ने) बुला लो उसको, क्यों गया ? कहने लगा (आकर) अरे तू आप मंगता है, मुझे क्या देगा। जब वह (प्रभु) किसी में प्रगट हो, वह (ऐसा महापुरूष) देने आता है। ''हर स्यों लैन मिलाय।'' वह अपनी जिन्दगी का दान देता है। आप उसमें समाता है, और उस समाई हुई चीज़ को दूसरों में प्रगट करता है। बात समझे ?

Word was made flesh and dwelt amongst us. (कि वह शब्द सदेह हो गया और हम इंसानों के बीच आकर रहा)। तो कर्म-धर्म ये हैं। बाकी अनुभव की बात है, ग्रन्थों-पोथियों में जिसका जिक्र है उसके दर्शन कराओ। बातें तो सुनते रहे सारी उम्र ही। इस भूल से जो निकालता है, इस की प्रत्यक्ष Demonstration (साक्षात्कार) जो दे सकता है, पूंजी दे सकता है, ''सन्तन मोका पूंजी सौंपी।'' उसी का नाम साधु, सन्त, महात्मा है। कपड़े रंगने का नाम नहीं। Acting-Posing का सवाल नहीं। जो दे सकता है, ऐसे देने वाले हज़ार मिलें। ये झगड़े कहां शुरू होते हैं ? जहां लेने का सवाल है। तो कहते हैं, बड़े साफ़ लफ़्ज़ हैं —

कर्म धर्म पाखण्ड जो दीसें, तिन जम जागाती लूटें।

आप गरूड़ पुराण पढ़कर देखिये। जब रूह पिण्ड को छोड़ती है, होता तो वही है ना, जैसा होता है (जीव)। वैसी ही भूख, वैसी ही प्यास, पढ़ने से कोई पण्डित नहीं बन जाता। जितना पढ़ा है उतना ही होता है ना। नेक कर्म का फल — जब प्यास लगती है, पानी चाहिये। कहता है (यमदूत) फलाना कर्म जो है, उसका फल हमको दे दो। फिर भूख लगती है, फिर कहते हैं फलाना जो पुण्य किया है उसका फल हमें दे दो। इस सारे कर्मों-धर्मों का जो है ना फल, वह यम ज़कात में ले लेते हैं। खाली रह गए। आजकल तो खैर पुलिस बड़ी reformed हो गयी (सुधर गयी) है, और हो रही है, जगह-जगह। पहले ये था,

घर से (आदमी) निकलता था, कचेहरी तक पहुंचते-पहुंचते जो कुछ उसके पास था, रस्ते में उसकी सफ़ाई कर लेते थे। वही बात हुई। कहते हैं इसकी कीमत समझे ? नेक कर्म जरूर है, मगर रस्ते में लूटे जाओगे।

जहं पैण्डे लूटी पनहारी, तहं सन्तन दूर बुरारी।

वह रस्ता दूर है। सन्तों का मार्ग, अनुभव का मार्ग जो है, ये Direct way back of God (परमात्मा तक वापस जाने का सीधा मार्ग है) ये रस्ता वह है जम रस्ते में ज़कात में उसको (मुसाफिर रूह को) लूट नहीं सकते। इन सबकी कीमत बता दी। ''स्वर्ग नर्क फिर - फिर औतार।'' क्यों ? कि इसमें (कर्म काण्ड में) हौंमे नहीं जाती। जब तक ये Doer (कर्ता) है, नेक का फल नेक बद का बद (भोगना पड़ेगा)। तो मैंने कहा दशम गुरू साहब के तीन सौवीं जन्म तिथि पर (समारोह में) कि हमें बड़ा भारी फ़ख़र (गर्व) है, दशम गुरू साहब का। क्योंकि उन्होंने बड़ा भारी काम किया। हर पहलू से काम किया, छोटी उम्र में। मगर एक बात उन्होंने पेश की, खालसा बनो, हम जागतो ज्योति के पुजारी हैं। ''पर्ण ज्योति जग घट में तब खालस तांहि नखालस जानो।'' (यहां टेप बदलने के कारण दो-तीन वाक्य कट गये हैं)।

ताकत तो वही होती है (जो सन्तों का काम करती है) मगर उसका Field of Action (कार्यक्षेत्र) बहुत बढ़ जाता है। सात सौ कितनी समाजें कहां (आज हजूर के जमाने में) और कहां दो समाजें (दसम गुरू साहब के वक्त में) तो हमारे हजूर का बड़ा भारी काम था East और West (पूर्व और पश्चिम) में। ये उनकी बरकत है लोग आते गए। उनको ये चीज़ (परमार्थ की पूंजी) मिल रही है। जिसको है, उसकी खास बख़शिश है घोर कलयुग में, नहीं तो लोग पहले बर्तन (पात्र) बनाया करते थे। सालों पास रहकर (गुरू के) समझते थे कि यह (शिष्य) बन गया (अधिकारी) तो फिर देते थे। अब पहले देते हैं, फिर कहते हैं, बर्तन बनाओ। जितना घोर कलियुग है, उतनी ही बखशिश है, वह भी बहुत ज्यादा है, ताकि कोई जीव बच जाए। बात समझे हो ? जो आप कर रहे हो सबकी कीमत समझ आ गई ? ''जम जागाती लूटें।'' ख्वाह वह ईसाई हैं, ख्वाह वह मुसलमान हैं, जो कर्म धर्म हैं सबकी कीमत अच्छी है — सोने की कीमत सोना, पीतल की कीमत पीतल, लोहे की कीमत लोहा। Preparation of ground के लिए हैं (ये कर्म-धर्म ज़मीन की तैयारी के लिए है)। आना-जाना खत्म करना हो तो उसकी ज्योति के देखने वाले बनो। एक तुक में सब फैसला कर दिया। यह उनका मिशन (काम) है ना ! आगे इसी को खोल-खोलकर समझायेंगे।

निरबान कीर्तन गाओ करते का निमख सिमरत जित छूटे।

निरबान कीर्तन जो निमिष मात्र भी करे, वह सुने उसको, तो छूट जाए। अब निर्बान

कीर्तन किसको कहते हैं ? कीर्तन दो किस्म का है। एक बाहरी इन्द्रियों के घाट का, एक वह, जो कि इन्द्रियों के घाट से रहित है, माया से रहित है।

पंजे शबद उल्लंघेयां पंज शबद वज्जी वधाई।

जो पांच तत्वों से (शरीर के) ऊपर चढ़ो तो वहां से शुरू होता है वह सिलसिला। कीर्तन एक घण्टा, दो घण्टे, चार घण्टे, छह घण्टे, एक दिन, दो दिन, ये अखण्ड कीर्तन है, Music of the Spheres.

अखण्ड कीर्तन जिन भोजन चूरा। कहु नानक जाके सत्गुरू पूरा॥

जो उसको Contact (ताल्लुक) दे सके उसका नाम है गुरू।

धुन आने गगन ते सो मेरा गुरूदेव।

वह निर्वान कीर्तन है। पांच तत्वों से ऊपर चढ़कर चलता है। पांच तत्वों का तरीका, जो कीर्तन है, ये नेक कर्म है। मगर ये बाहर का कीर्तन आपको Matter (जड़ प्रकृति) के End (सीमा) तक पहुंचाएगा, Transcend नहीं करेगा (अर्थात् उससे ऊपर नहीं ले जायेगा)। फिर ये कहा —

साध संग हर कीर्तन गाइये।

रागियों के संग नहीं माफ़ करना। वह तो पांच तत्वों के आधार पर जो कीर्तन है, उसके सुनाने वाले हैं। ठीक है। और जो अखण्ड कीर्तन है वह मुफ्त दिया जाता है। बाहर तो बगैर पैसे के नहीं सुनाएंगे ना ! दो चीज़ें पेश कर दी। बाहर कर्मों धर्मों की कीमत क्या है, वह बता दी, और कहा, कोई तरीका इससे निकलने का है (इस भ्रमजाल से) ? कहते हैं वह अखण्ड कीर्तन है, निर्वान है, जो पांच तत्वों के ऊपर से चलता है। अब अपनी जगह नज़र मारकर देखो, जिस-जिस समाज में हो, आप कहां बैठे हो ? ये Basic (मूलभूत) तालीम है सब समाजों की। महापुरूष आए उनकी Basic तालीम ये है। मैंने Quotations दी है (उद्धरण प्रस्तुत किये हैं महापुरूषों की वाणियों के) जितनी मेरी समझ में आई। **जो मुझे समझ आया मैंने किताबों में रख दिया है, जितनी समझ आई। और उसके कोई Rights Reserved (सुरक्षित अधिकार) नहीं रखे। यह बख़शिश है भई। कोई उसकी रायलटी नहीं रखी। जो समाज ये रजिस्टर्ड है (रूहानी सत्संग) उसमें मेरी कोई Veto Power (अपने एक मत से सबका मत रद कर देने की ताकत) नहीं। अगर आगे को इसका (रूहानी सत्संग का) चलना उसको (प्रभु को) न मन्जूर हुआ तब तो ठीक, जो उसकी रज़ा — The whole thing should be transferred to some other society,**

not to the founder-members, nor my children, nor directors (यदि मेरे बाद ये सिलसिला आगे चलना प्रभु को मंजूर न हुआ, अर्थात् कोई ऐसा अनुभवी पुरूष इस समाज में न निकला जो बिठाकर परमार्थ की नक़द पूंजी, पिण्ड से ऊपर लाकर उस करन-कारण प्रभु-सत्ता से जोड़ने की लोगों को दे सके, तो सारा सामान इस समाज का उस संस्था को दे दिया जाए जहां ये काम हो रहा हो, इस समाज के संस्थापक सदस्यों या मेरे बच्चों या इसके डायरेक्टरों के हवाले न किया जाए) तो कहते हैं ये है निर्वान। अब आगे क्या है, और कुछ कहेंगे, इसी मज़मून को वाज़ेह (स्पष्ट) करेंगे। शब्द छोटे होते हैं, मतलब से भरे पड़े होते हैं। अन्तर में दो ही मार्ग हैं, एक ज्योंति मार्ग, एक श्रुति मार्ग। ज्योति मार्ग तक तो वेदशास्त्र भी ख़बर देते हैं। इशारे दिए है, उसके अभी, Direct (सीधा) नहीं दिया। मगर जब ज्योति से घिर जाए फिर किधर जाए ? उसके लिए नाद (श्रुति) का रास्ता है। और उसका Contact (व्यक्तिगत अनुभव) महापुरूष पहले दिन देता है। कर्मों-धर्मों का तो, रहो जिसमें (जिस समाज में) तुम हो, Don't change the formation you are in. "They (Masters) come to fulfil not to destroy." (महापुरूष समाजों को न तोड़ते हैं न नयी समाज बनाते हैं। वे सब समाजों को पुष्टि देने आते हैं)।

सागर पार उतरिये, सागर पार उतरिये।

यह संसार सागर है। कैसे पार जा सकते हैं ? इस संसार सागर से तरने के लिए, सिर्फ नाद का अनुभव चाहिये, ज्योति का विकास चाहिये। निर्वान कीर्तन चाहिये। मानुष देह मिली है, इसमें तुम अपने घर जा सकते हो, संसार से सागर हो जाओ।

जे को बचन कमावे सन्तन का सो गुर प्रसादी तरिये।

जो सन्तों के वचनों को, हुकम को कमाता है, वह गुरू कृपा से संसार सागर से पार हो जाता है। सन्त किसको कहते हैं ?

हमरो भरता बड़ो विवेकी आपे सन्त कहावे।

वह परमात्मा जिसमें प्रगट है। वह क्या कहते हैं ? ''सन्तन मोको पूंजी सौंपी।'' पूंजी किस बात की देते हैं ? जो उसमें प्रकट है। अपनी जान देते हैं। नाद का अनुभव कराते हैं, ज्योति का विकास करते हैं। श्रुति और ज्योति मिलती है कहीं ? किसी जगह जाओ, Rare (दुर्लभ) है। हजारों में शायद कोई एकाध इशारा देने वाला मिल जाए, नहीं तो, ''लाखन में कोई है नहीं, कोटिन में कोई एक।'' आप अन्दाजा लगाओ ऐसी हस्तियां दुनियां में कब आती हैं ? और उनकी बख़शिश का सैलाब आ जाता है (दयामिहर की बाड़ आ जाती

है)। दुनियां रंगी जाती है। कोई देता है किसी को ? कर्म मी बतायेंगे, ग्रन्थ भी बतायेंगे, साधन भी देंगे, जप भी करायेंगे, सब कुछ करायेंगे, करामातें भी आ जाएंगी, लोगों के दिलों का हाल जानना भी हो जाएगा, वर भी दे सकेंगे, श्राप भी — पर कितने हैं जो ज्योति को प्रगट कर सकते हैं ? बड़े गौर से सुनिये। **आजकल ज्योति भी कई तरह से जगाई जाती है। दबाओ तो (आंखों को) ज़रा Concussion होती है, वह ज्योति-ज्योति नहीं है। या Visualise (ध्यान) कराते हैं, ज्योति का ध्यान करो। गधे का ध्यान करो गधा, घोड़े का ध्यान करो घोड़ा। वह ज्योति कहां है ? वह ज्योति तो पांचों तत्वों से ऊपर चलती है।**

इस काया नगरी अन्दर मंगन चढ़ें जोगी, तां नांओ पल्ले भाई।

काया को छोड़ो, ऊपर चढ़ो, तब ये चीज मिलती है। सबके अन्तर है (ये चीज़) सबका जीवनाधार है। उसी को पाना है। कहीं बाहर जाना नहीं।

घर ही बैठे शौह मिले जे नीयत रास करे।

दिल में हो उसको पाने का सच्चा शौक, वह परमात्मा घट में बैठा है, आप Arrange करेगा (सामान करेगा) आपको ऐसी जगह मिला देगा, जहां वह प्रगट है। गुरू अमरदास साहब को सत्तर बहत्तर साल के बाद जब उनको गुरू अंगद साहब मिले तो कहने लगे, ''बिन भागां ऐसा सत्गुरू न मिले।'' शुक्राना निकलता है, दिल से निकलता है। एक बात रखी, जो वचनों को कमाए उसको गुरू कृपा होगी। बस। " If ye love me Keep my Commandments" (अगर तुम मुझसे प्यार करते हो तो मेरी आज्ञाओं का पालन करो)। यह पहली बात है। ''सत्गुरू बचन, बचन है सत्गुरू।'' जो उसके वचन हैं, वही सत्गुरू है। जो वचनों की कद्र नहीं, खाली बाहर नाचते-टापते हैं, वह क्या लेंगे। बड़ी साफ़ बात है। एक Condition (शर्त) है। वह जो कहता है करो। बड़ी साफ़ बात है। वह क्या कहता है ? मानुष देह बड़े भागों से मिली है। प्रारब्ध कर्मों के अनुसार तुमको ये भाई-बहनें, माता-पिता, स्त्री पुरूष का संबंध बना है। उसकी खुशी — क्योंकि प्रभु की कलम से बने हैं ना ! उसको खुशी से निभाओ।

पूरा सत्गुरू भेटिये पूरी होवे जुगत। हसंदेयां खवेंदयां पहनन्देयां विच्चे होवे मुक्त।

घर-बार छोड़ने की जरूरत नहीं। क्या करो ? तुमको बाहर से हटाकर अन्तर ज्योति का दान वह देता है, उसकी कमाई करो। ये कब होगी ? जब जीवन साफ़ होगा, साथ जीवन की सफ़ाई रखो, डायरी रखो। वह नहीं कहता जायदाद मेरे हवाले करो, माफ़ करना। हजूर (श्री हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज) फरमाया करते थे, ओ मुश्किल से

गुरू ने अपना मन काबू किया है, तुम्हारे मनों को लेकर क्या करेगा ? एक बार हजूर बैठे थे, संगत बहुत सारी बैठी थी। महापुरूष बाज़ वक्त, जो उनकी काबलियत हो, उसकी कुछ झलक आ जाती है ना ! कहने लगे, भई कोई मन दे, अभी जा सकता है। संगत इससे भी (जो अब यहां बैठे हैं) ज्यादा होगी। एक उठा, महाराज, मैं मन देता हूं। फरमाने लगे, पहले मन को अपना तो बना। अब तो नाचते-फिरते हो, मन मुरीद हो।

मन मुरीद संसार है, गुर मुरीद कोई साध।

ओर उनका मता (मत) क्या है ? आजाद है। कहना मानना सीखो, तुम्हारा बेड़ा पार है। भरोसा रख लो तुम्हारा बेड़ा पार है। वह बाहरमुखी (सिलसिलों) से हटाते हैं, हम बाहरमुखी खचित होते हैं, कैसे काम बने। बात समझे हो ? एक कहना मानो। ''जो बचन कमावे सतगुर का।'' उस पर गुरू कृपा हो जाएगी। जो बचन नहीं कमाता वह कैसे साहिबे जायदाद (गुरू की नाम की जायदाद का मालिक) होगा, मुआफ़ करना। वचन कमाना, उससे आप कृपा करे। सिर्फ मुंह करे ना (उधर) फिर सब कुछ वह आप करा भी लेता है। ये भी एक बख़शिश है, Karmic Reaction हो (पुरबले कर्म उदय हों) उनकी ख़ास दया हो। पर मानुष देह ही में ये काम कर सकते हो, और किसी में नहीं। हमारे हजूर फर्माया करते थे, एक चोर हो। एक मकान खाली मिल जाए, वहां और कोई न हो। पता हो इसके फर्श के नीचे हीरे-जवाहरात दबे पड़े हैं। क्या रात को उसको नींद आएगी ? रात ही रात निकालेगा कि नहीं ? ये सबके अन्तर है, हिन्दू निकाल ले उसका, मुसलमान निकाल ले उसका है। हिन्दू मुसलमान तो हमने बनाए भई। ''मानस की ज़ात सब एके तहिचानबो'' और, ''एको नयन, एको कान।'' यह है तालीम महापुरूषों की। कर्म-धर्म कुछ नहीं। तुम्हारा आना-जाना कैसे खत्म हो सकता है ? अन्तर प्रभु से जुड़ने से। उससे कौन जोड़ेगा ? जो जुड़ा हो। ''कोई जन हर स्यों देवे जोड़।''

कोटि तीरथ मज्जन अश्नाना इस कल में मैल भरीजे।

कोटि तीरथ, करोड़ों तीरथ, कितने होंगे तीरथ दुनियां में ? तीरथ, शायद करोड़ों हों। कोई बड़ी बात नहीं। कहते हैं करोड़ों तीरथ तुम अश्नान कर लो ''कोटि तीरथ मज्जन अश्नाना।'' उसमें मल-मल कर नहाओ। फिर ? तुम्हारे अन्तर मैल और बढ़ जाएगी। ''इक मैल लाती धोतियां दो भा चढ़ गइयां।'' एक उतरी दो चढ़ गयीं। मैं तीरथ वासी, मैं यह हूं, मैं वह, मैं आलिम-फाज़िल (विद्वान) हूं।

जल के मज्जन जे गत होवे नित-नित मेंडक न्हावे।

ये कबीर साहब कहते हैं। कबीर साहब साफ़ कहते हैं।

दिल दरिया की माछरी गंगा बह आई। अनिक जतन से धोवई तो भी बास न जाई।

गंगा जल कितना पवित्र है, कंकर-कंकर नज़र आता है। क्या मछली उसमें जाए उसकी बदबू हट जाती है ? जिस्म को धोने से तन की मैल जाएगी, मन की मैल जाएगी नाम से अंतर जुड़ने से। ''नाम मिलिये मन तृप्तिये। विन नांवें धृग जीवास।'' ''बिन गुर पूरे कोई न पावे, लख कोटि ने कर्म कमावे।'' बड़ी Comparison (तुलना) की है। आप अब समझ रहे हो, कि आपकी कल्याण किस बात में है ? जो करते हो वह तो करते रहो। उससे आना-जाना नहीं खत्म होगा, नहीं होगा, नहीं होगा। अन्तर में वह दवा है तुम्हारे, जो प्रभु ने रखी है। पहाड़ों पर जाओ ना, वहां एक बिच्छू बूटी होती है। वह लग जाए, ऐसे लगता है जैस बिच्छू लड़ गया। साथ में एक साग होता है। वह मलो तो ठीक हो जाता है। यह दोनों, मन भी अन्तर बैठा है, वह भी बैठा है। बिच्छू बूटी सबको लड़ी पड़ी है, माफ़ करना। वह साग लगा ले तो बेड़ा पार हो जाए, और क्या। कितना प्रोग्राम नज़दीक भासता है, क्यों साहब। अकल किसको है। इतनी नज़दीक चीज़ को हम भूल रहे हैं।

है घट में सूझत नहीं लानत ऐसी जिन्द। तुलसी या संसार को भया मोतिया बिन्द।

एक ही घर में दो भाई रहते हैं, आत्मा और परमात्मा —

एक संगत इकत गृह बसते मिल बात न करते भाई।

कितना अफ़सोस का मुकाम है। मुद्दतें हो गयीं ये मानुष देह हमको मिले हुए, मुद्दतें हो गयी किसी न किसी स्कूल में दाखिल हुए, मुद्दतें ही हो गयीं जो साधन बताये गये करते रहे, जिनका ताल्लुक मन-इन्द्रियों के घाट की भक्ति, एक गुरूमुख भक्ति। समझे। जगह-जगह आया है (गुरूबाणी में) ''गुरू द्वारे हर नाम उचरो।'' कुछ मतलब है आखिर भई। इन भक्तियों में बड़ा भारी फर्क है। वह ठीक है, बाहर की जितनी भक्ति है, वह नेक कर्म हैं, नेक फल मिलेगा, आना-जाना खत्म नहीं होगा, ''स्वर्ग नर्क फिर-फिर औतार।'' गुरूमुख भक्ति से पहले दिन, वह उस जगह लग गयी, बेड़ा पार है। सिर्फ एक उसके बचन, कहना मानो। हमारे हजूर फर्माते थे, भई नींद से घंटा दो घंटे निकाल लिया करो। तुम्हारा वक्त भी हर्ज़ नहीं होगा।

साध संग जो हर गुण गावे सो निर्मल कर लीजे।

''मन मैले सब कुछ मैला, तन धोते मन हच्छा न होय।'' फिर ? ''इह जगत भरम बुलाया विरला बूझे काये।'' अब इस मैल से निकलें कैसे ? कि साधु का संग करो, हरि का गुण गान सीखो। कैसा गुण गाना है ?

जब देखा तो गावा, तो गावे का फल पावा।

वह काम किसके पास कर सकता है ? सत्स्वरूप हस्ती के। सत्स्वरूप हस्ती किसको कहते हैं ?

सत्पुरूष जिन जानिया सत्गुरू ताका नांओ।
तिसके संग सिखि उद्धरे नानक हरि गुण गाओ।

वह (सत्गूरू) क्या करता है ?

सत्गुरु मिले तां अख्खी वेखे घरे अन्दर सच पाए।

कितने साफ़ लफ़्ज़ हैं ? ''घरे अन्दर सच पाए।'' जिसको ऐसी सत्स्वरूप हस्ती मिल जाए कितने ऊंचे भाग हैं। बड़े प्यार से समझा रहे हैं। साधु संग में ये बातें होती हैं। साधु किसको कहते हैं ?

साध प्रभु भिन्न भेद न भाई। साध रूप अपना तन धारियां।
साध के संग वस्तु अगोचर मिले।

अगोचर वस्तु में है कल्याण, वह सबमें है।

अदृष्ट अगोचर नाम अपारा। अति रस मीठा नाम प्यारा।

बड़ी भारी मिठास है, नशा है उसमें।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।

उसको ईसाइयों में Word (वर्ड) कहते हैं। In the beginning was the Word, Word was with God, Word was God (शुरू में वह नाम या शब्द था, शब्द परमात्मा के साथ था, शब्द ही परमात्मा था)। सारी दुनियां उसके बाद बनी। ''शब्द धरती शब्दे आकास। शब्दों शब्द भया प्रगास। सगली सृष्टि शब्द के पीछे, नानक शब्द घटोघट आछे।'' वह (परमात्मा) अशब्द है। शब्द हुआ सब कुछ हुआ।

नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।

सब (महापुरूष) एक बात कहते हैं। कलमे से चौदह तबक बने हैं। Word से सारी दुनियां बनी है। सबकी तालीम यह है, सिर्फ रस्मों-रिवाजों, आमिल लोगों की कमी के सबब से, होश नहीं आ रही। हम सब सो रहे हैं। और मुआफ़ करना, कबीर साहब के

पास एक पण्डित गए। उनका नाम था सर्बाजीत। उसने सबको शास्त्रार्थ करके हरा दिया था और अपना नाम रखा सर्बाजीत। माता को कहने लगा, माता, मुझे अब सर्बाजीत कहा करो। मैं सबको जीत आया हूं। माता ने कहा, ठीक है तू जीत आया है। मगर तू कबीर को जीत आए तो फिर मैं तुझको सर्बाजीत कहूंगी। ज़ोम (घमण्ड) था, ग्रन्थ-पोथियां लाद लीं, चल पड़े। गए कबीर साहब के पास। हां पण्डित जी महाराज, कैसे आए हो ? कहने लगे, आए हैं जीतने के लिए। सबको जीत रखा है। तुम्हीं एक रह गए हो। अच्छा तुम क्या चाहते हो ? तुम चाहते हो तुम जीत जाओ। मैं हार जाऊं ? कहने लगे, हां। कहने लगे, लिख लाओ में दस्तख़त (हस्ताक्षर) कर दूंगा। जीत-हार के लिए शास्त्रार्थ होते हैं ना। लिखा (सर्बाजीत ने) अपनी तरफ से, कबीर हारा, सर्बाजीत जीता। दस्तख़त कराके कबीर साहब से घर ले गया। माता को कहा, देख, अब तो मैं जीत आया हूं। भई ये तो लिखा है, कबीर जीता, सर्बाजीत हारा। ओहो ! ग़लती हो गई। मैंने ही लिखा था। फिर भागे, फिर जा पहुंचे। महाराज, फिर लिख लें। ग़लती हो गई है। ओ फिर लिख लो। फिर लिखा अपनी तरफ से वही, कबीर हारा, सर्बाजीत जीता। फिर दस्तख़त कराके ले आया। लो माता, अब तो देख लो। कि ये तो वही लिखा है, कबीर जीता और सर्बाजीत हारा। अब बड़े जोश में आए, चल पड़े। महाराज, मुझसे गलती हो गई। फिर डॉक्टर जब आप्रेशन करता है, वह लिहाज़ नहीं करता।

तेरा मेरा मनुवा कैसे इक होई रे।

मैं कहता हूं आंखन देखी तू कहता कागत की लेखी।

कि तेरा मेरा मन कैसे मत्तफ़िक़ (सहमत) हो सकता है। मैं तो देखकर कह रहा हूं तू कागज़ों का लिखा बयान कर रहा है। मैं कहता हूं जागो, तू कहता है जो कर्म-धर्म तुम कर रहे हो, ठीक है, किए जाओ। यही तुम्हारा कर्म है। तुम सोए हुए पर और दो रजाइयां डाल देते हो। बड़ा लम्बा-चौड़ा मुकालमा (बातचीत, संवाद) है। फिर आखिर बड़े सख्त लफ़्ज़ है, जब महापुरूष कहने पर आ जाएं तो लिहाज़ नहीं करते। तो क्या कहते हैं।

तू तो रण्डी फिरे विहण्डी।

बड़े सख़त लफ़्ज़ हैं। तू रण्डी है, हभी हण्डा भी नहीं (प्रभु, जिसका वर्णन करते हो, उससे कभी सम्पर्क नहीं आया, उसका रस नहीं लिया)। अपना जीवन बर्बाद किया, जो तुमसे मिले उनका भी जीवन बर्बाद कर रहे हो। बताओ। तो दो ही मार्ग हैं, एक उधर का एक इधर का, एक परा एक अपरा। साधुओं का मार्ग परा का है, और ये, अपरा इन्द्रियों के घाट की भक्ति है। गुरूमुख भक्ति (जो गुरू द्वारा मिलती है) Direct Contact (परमात्मा

से सीधा जुड़ने) से होती है, ''सन्तन मोको पूंजी सौंपी।'' जो दे सकता है (पूंजी) उसका नाम सन्त है। बड़ी भारी उलझन है, माफ़ करना। एक गधा हो। लदा पड़ा हो बोझ से। कीचड़ में फंसा पड़ा हो साथ में। फिर। कौन निकाले ? किसी को रहम आ जाए। वह उसके बोझ को हल्का करे पहले। तभी निकल सकेगा ना ! फिर खैंच कर निकाले। मन-इन्द्रियों के घाट को छोड़ना कोई ख़ाला जी का घर है ?

खैंचें सुरति गुरू बलवान।

उनका खर्च, थोड़ी तवज्जो। कोई खर्च नहीं होता। मैंने हजूर (श्री हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज) से कहा, हुक्म आपका रहा। नौकरी, थोड़ी ड्यूटी मेरी रही। बाकी तुम जानो। जन्मों-जन्मों के बोझ (कर्मों के) लदे पड़े हैं। धृतराष्ट्र से पूछा गया, तुम किस कर्म के बदले अन्धे हो, जन्म से। कहने लगे, सौ जन्म तक तो मुझे मालूम है। मैंने कोई ऐसा कर्म नहीं किया। भगवान कृष्ण योगीश्वर गति वाले थे। उन्होंने कहा, एक सौ छहवें जन्म में हटो, ये कर्म है। सौ-सौ जन्मों के कर्मों के बोझ को थोड़ा हल्का कर सके, फिर तवज्जों देकर ऊपर लाए। जो इन्द्रियों के घाट का रूप बना बैठा है, साधन वह करे जिनका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है, वह इन्द्रियों के घाट से कैसे ऊपर आ सकता है ? ये है साधुओं का काम, ये है सन्तों का काम। ये है गुरूमुख भक्ति, और दूसरी है मन-इन्द्रियों के घाट की भक्ति जो नेक कर्म है। ठीक है, करो। नेक फल मिलेगा। आना-जाना नहीं खत्म होगा।

वेद-कतेब स्मृति सब शास्त्र तिन पढ़ियां मुक्ति न होई।

वही बातें कह रहे हैं। वेद सब आ गए, कतेब, स्मृतियां, धर्म शास्त्र सब और धर्म पुस्तकें जितनी हैं, इनके पढ़ने से मुक्ति नहीं। बस। आना-जाना खत्म नहीं होगा। इनमें (धर्मग्रन्थों में) जिसका जिक्र है उसको पाओ। वही मैंने कहा ना, ऐ मुल्ला अब किताबों को बन्द कर दे। जिसका इनमें जिक्र है, उसके हमें दर्शन करा दे। बस। बड़ा आलिम, बड़ा फाजिल, ग्रन्थाकार, जितनी धर्म पुस्तकें अन्दर लायब्रेरियों में बन्द पड़ी हैं, सब पढ़ ले, क्या उससे मुक्ति हो जायेगी ? गधे पर लाख किताबें लाद दो तो क्या उसको ज्ञान हो जाएगा ? इनकी Value (कीमत) आप समझने का यत्न कर रहे हो। समझने के लिए हैं। समझना क्या है ? कि हमारी आत्मा प्रभु की अंश है We are all brothers and sisters in God. हमारा जीवनधार घट में बैठा है। जो चीज़ जहां है वहीं मिलेगी, जहां नहीं वहां नहीं मिलेगी।

सब किछु घर में बाहर नांहि। बाहर टोले सो भरम भुलांहि।

और क्या कहें ?

गुरू साखी जोत परगट हो।

तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, पढ़ने से मुक्ति नहीं, कोई झूठ नहीं कह रहे। पढ़ने से नहीं, जो लिखा है (इन पुस्तकों में) उसको पाने से है। पहले समझो। समझाएगा कौन ? महापुरूषों का बचन है, कौन समझाएगा ? ''देखे का मत एक।'' जिन्होंने देखकर बयान किया है, उनकी बाणियां हैं, इनका Right Interpretation (सही अर्थ) वही करेगा जो देखता है। नहीं तो बुद्धि के Level (स्तर) पर कोई कुछ, कोई कुछ, कोई कुछ (अर्थ करेगा)। पढ़ लेना भी और आगे समझ भी आ गई, ये भी काफी नहीं, जब तक उसको पाओ नहीं। इस बात की Clarification (निर्णय, स्पष्टीकरण) कहां होती है ? ''साध के संग बुझे प्रभ नेरा।'' अब नज़दीक मालूम होता है अन्तर में बैठा है। अन्धेरगर्दी है, जन्मों-जन्मों तक कर-करके हार गए, उसकी सूरत- ''सूरत यार दी असल विखा सानूं।'' वह न देखी तो क्या है।

एक अखर जो गुरूमुख जापे तिसकी निर्मल सोही।

एक अखर (अक्षर) कौन है ? वही, परमात्मा। आगे उसके फैलाव हैं, जितने मरज़ी अखर बना लो। कहते हैं जो उसके साथ जुड़ गया, वह एक ही है, उसमें मिलावट कोई नहीं, निरोल है, उसकी मुक्ति है (जो उसके साथ जुड़ जाए) अगर आपके नाम, मैं तो कहता हूं हम बड़े ख़ुशनसीब हैं, हमारे नाम पर, जिनको नाम मिल गया वो ख़जाना अन्दर जमा है। तुमको Window (खिड़की) पर लेने का हक़ भी दिया गया है। अगर आप Window पर न जाओ तो ? तुम्हारे लाख रूपया जका हो, आपके हाथ में एक पैसा न हो ! हैं तो सब Millionaire (लखपति)। सब लखपति बैठे हो, मगर खाने को एक लुकमा नहीं, फिर क्या है ? वह (पूर्ण पुरूष) निकाल कर देने का साधन, कुंजी देदे, कि रोज़ निकाल लो, जितना मरजी निकाल लो। करो सही। ऐसे पुरूष की सोह, सुनने से, ज़िन्दगी आ जाती है। है कोई ऐसा पुरूष ? स्वामी जी महाराज का एक शुब्द है, कि मेरे दिल में उसको (गुरू के) पाने की ख्वाहिश हुई, तो मैं घाट-घाट पर फिरी। जो लैकचर कथा सुनाते हैं। ये घाट-घाट ही हैं। मगर मेरी तसल्ली नहीं हुई। कोई ऐसा पुरूष न मिला जो मेरे इस (तन-मन के) कपड़े को धो दे। आखिर एक सहेली मिली। वह कहने लगी, हां, ऐसे सत्गुरू आए हैं। ऐसे पुरूष की खबर सुनने में भी बड़ी भारी खुशी हो जाती है। कि आए हैं सत्गुरू जो इस कपड़े को धो देते हैं। तो कपड़ा (तन-मन का) धोने वाला साधु कहीं कहीं मिलेगा। और कितने पैसे लेगा ? कुछ भी नहीं।

क्षत्री, ब्राह्मण, शूद्र, वैश उपदेश चहुं वरणों को सांझा।

अब ये उपदेश किन आदमियों के लिए है ? इंसानों के लिए है, ख्वाहें बाहर का लेवल कोई हो, कोई क्षत्री हो, ब्राह्मण हो, वेश हो, शूद्र हो, सबके लिऐ एक ही उपदेश है। यह नहीं कि हिन्दुओं के लिए और, क्षत्रियों के लिऐ और, ब्राह्मणों के लिए और, शूद्रों के लिए और। सबके अन्तर में वह आप बैठा है। ये शूद्र, ब्राह्मण, यह-वह हमने बनाए भई। परमात्मा ने तो इंसान बनाए, पूरे हकूक (पूर्ण अधिकार) दिए। उसमें (मानव तन में) आप भी बैठा, हमको भी बिठाया। और कहा, अन्तर्मुख आ जाओ, Knock the door दरवाजा खटखटाओ। क्राईस्ट ने कहा कि दरवाजा खटखटाओ। वह कहां है दरवाजा ? दो भ्रुमध्य, आंखों के पीछे, जहां इस दुनियां और अगली दुनियां का Border (सीमा) है। यहां लगाओ (ध्यान)।

लगाओ सुरति अलख स्थान पर जाको रटत महेशा।

वहां पहुंचो तो दरवाज़ा खटखटाओ ना, बाहर खड़े हुए तो दरवाज़ा नहीं खटखटाया जागता ना ! अन्दर आओ, दरवाज़ा खटखटाओ, तब खुलेगा ना ! यहां तक चलो, दरवाज़ा खटखटाओ, खोला जाएगा। और कहता है (क्राइस्ट) मैं तुम्हारे साथ रोटी खाऊंगा। वह (सत्गुरू) तो इन्तजार कर रहा है आप सब भाईयों की।

गुरमुख नाम जपे उधरे सो कल में घट-घट नानक मांझा।

कहते हैं, इंसान का उद्धार हो सकता है, जो गुरूमुख भक्ति करे। वह भक्ति कहां है ? वह घट-घट में है। वह क्या है ?

धुर कर्म पाया तुध जिनको से नाम हरि के लागे।
कहु नानक तहं सुख होवा तित घर अनहद वाजे।

तो एक गुरूमुख भक्ति और एक मन इन्द्रियों के घाट की भक्ति, एक अपरा विद्या कहो, एक पराविद्या कहो। मनइन्द्रियों के घाट की भक्ति जितनी है, उसका जिक्र आ गया। वह नेक कर्म है, नेक फल मिला, आना-जाना बना रहा। पिण्ड, अण्ड, ब्रह्मण्ड में चक्कर काटते फिरे। और गुरूमुख भक्ति ? इसके लिए बड़ी ताकीद की है, महापुरूषों ने। गुरू रामदास जी फरमाते हैं —

गुरूमुख भक्ति करो सद प्राणी।

ऐ प्राणियों, तुम हमेशा गुरूमुख भक्ति करो, जो गुरू द्वारा मिलती है। कहते हैं उसकी निशानी क्या है ? ''हृदय प्रगास होवे लिव लागे।'' गुरमत की मोहताज है। तुम्हारे अन्दर प्रकाश होगा। ये निशानी है। जाओ ढूंढो। जगह-जगह हरेक चीज़ को खोल-खोलकर

बयान किया है। गुरूमुख भक्ति आप समझे इन्द्रियों के घाट के ऊपर आकर इसकी क, ख, शुरू होती है। Where the world's philosophies end there the religion starts (जहां विश्व के सारे दर्शन खत्म हो जाते हैं, वहां से परमार्थ की क, ख, शुरू होती है)। जो उसकी तालीम दे सकता है, उसकी Demonstration दे सकता है, (उसका साक्षात्कार करा सकता है) दिव्य चक्षु को खोल सकता है — If thine eyes be single thy whole body shall be full of light. (अगर तुम्हारी दो की एक आंख बन जाए, तुम्हारा सारा शरीर प्रकाश से भर जाएगा)। उसका नाम गुरू है, उसका नाम साधु है, उसका नाम सच्चे मानों में महात्मा है। कितना वाजेह (स्पष्ट) कर दिया। छोटा सा शब्द है, सारी फिलासफ़ी इसमें समा गई है। देखो कितनी साफ़गोई है, सादा वचनों में असलियत पेश कर दी। ऐसे महापुरूष आते हैं, ऐसे समय में जबकि बहुत कशमकश हो। और ये ज़माना सात सौ कितनी समाजों का है। यहां कौन-सा कर्म रहे, कौन-सा धर्म रहे, मुआफ़ करना। आप चाहो कि एक ही रस्म सबकी बन जाए, एक-सी शकलें बन जाएं — कब हो सकता है। Climatic Differences (जलवायु का अन्तर है विभिन्न देशों में) हैं, रस्म-रिवाज अलग-अलग हैं। तो कहते हैं जो Basic (मुलभूत) चीज़ का तुम्हें अनुभव करा सकता है, तुम्हारे अन्तर में ही उसकी पूंजी दे सकता है, वह भक्ति करो। बस। गुरूमुख भक्ति करो। मन-इन्द्रियों के घाट से भक्ति का अपना फल, इसका अपना फल है।

यह गुरू अर्जन साहब का शब्द था। कई बार पढ़ा होगा। कितना Beautifully (खूबसुरती से) पेश किया है मज़मून को। महापुरूष तुम्हारी समाजों को नहीं छेड़ते। लगाए रखो लेबल (चिह्न-चक्र आकार अपनी-अपनी समाजों के) बड़ी अच्छी तरह सजाए रखो। ''बहु भेख किया देही दुख दिया, सहो वे जीया अपना किया।'' भेखों के बनने से प्रभु मिलता है भई तो हम कल ही बनायें। कबीर साहब जुलाहे थे, नामदेव छीम्बे (कपड़ा छापने वाले) थे, रविदास चमार थे। ये कोई सवाल नहीं। परमात्मा ने एक जैसे हकूक (समान अधिकार) सबके अन्तर में रखे हैं।

इह सरीर हरि मन्दिर है इसमें सच्चे की ज्योति।

अन्तर्मुख हो, उसको पा जाओ। बाहर से हटो। मैं आपको देख रहा हूं सामने। पीछे तो नहीं देख रहा हूं। इधर से देखना हटूं, पीछे देखूं, तो नज़र आए ना। पीछे हटो, वह मौजूद है। वह इन्तज़ार (प्रतीक्षा) कर रहा है हमारी भई। जो उसके साथ जोड़ दे, अरे भई कितना भारी अहसान है। किनको जोड़ता है ? जिनके अन्तर शौक है, तड़प है, पिछले कर्मों के अनुसार या यहां सोहबत संगत के अनुसार, या विवेक के सबब से, जिसको ये ख्वाहिश

दिल में पैदा हुई है, That is the greatest day in a man's life (वह इंसान के जीवन का सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण दिन है) क्योंकि वह Urge (वह ख्वाहिश) कभी खत्म नहीं हो सकती जब तक वह चीज़ न मिले। उसके लिए अन्तर बैठा है परमात्मा, ये तड़पता है बच्चा मेरे पाने के लिए। वह क्या करे ? हम उसको कह रहे हैं। वह सामान करेगा, जिस घट में प्रगट है उससे मिला देगा। कपट न हो, दिल में और ज़बान पर और न हो। चतुराई की बातें करके उसको छिपाता न हो। भक्ति भाव हो। और नम्रता हो। तो, ''आप मिलिया गुरू आए।'' Guru appears when the chela is ready. बात समझे हो ? कितनी साफ़ बात है ? जो वक्त गुज़र गया सो गुज़र गया। Time and tide wait for no man (अर्थात् समय और दरिया की लहर किसी का इन्तज़ार नहीं करते)। वक्त से फ़ायदा उठाओ। बाकी अपनी-अपनी समाजों में रहो, अपने-अपने बोले रखो। अरे जिसके जिक्र से ग्रन्थ-पोथियां भरी पड़ी हैं, उसको पाओ।

हम हैं बाहिरमुखी। समझाने के कई तरीके हैं। कहते हैं, एक बादशाह था। उसने मीना बाज़ार लगाया था। उसमें तरह-तरह के चीज़ें रखीं बड़ी अजीबो-गरीब। और रिआया (प्रजा) को हुक्म दिया कि कोई आए, कोई चीज ले सकता है। मगर एक बार। जो मरजी है ले जाए। लोग आए, अहाहा। क्या चीजें हैं कीमती, कहीं रेडियो है, कहीं टेलीविजन है, कहीं और इससे बढ़कर चीजें पड़ी हैं। हाथ लगाया और बस। वाह वाह करते जाएं, उठा नहीं सकते। एक लड़की, बाहर से भोली भाली, बीच से सियानी, कहने लगी, क्या आला बाज़ार है, किसने लगाया है ? ये दरख्त लग रहे हैं, फूल खिल रहे हैं, दरिया बह रहे हैं, पानी पर ज़मीन खड़ी है, तीन हिस्से पानी, एक हिस्सा ज़मीन, ग़र्क क्यों नहीं हो जाती, ऐसे सितारे हैं जो पांच-पांच हज़ार साल में एक बार अपने आरबेट (घेरे) में चलते हैं, कितने Controlled (नियन्त्रण में) जा रहे हैं। ये किसने बनाया है ? कभी ख्याल आया है ? ''तारीफ़ उस खुदा की जिसने जहां बनाया।'' कभी आया (ख्याल) ? वह लड़की बड़ी सियानी थी। चलते-चलते (कहती जाए) वाह-वाह, ये बड़ी अच्छी चीज़ है, ये बड़ी अच्छी चीज़ है, इसे बनाया किसने है ? बादशाह बैठा था, ऊपर एक किनारे पर। वह भी बड़ा हैरान था कि मेरी सारी रिआया (प्रजा) में मुझे चाहने वाला कोई नहीं निकला। जो निकला मेरी चीज़ों का ही चाहने वाला निकला। वह गयी पास कि कौन बैठा है ? कि बादशाह बैठा है जिसने मीना बाजार लगाया है। अच्छा। लपकी उस तरफ़। बादशाह दिल में तो जरूर खुश हुआ, चलो एक तो चाहने वाला कोई निकला, मगर बाहर से ज़रा सख्त होकर कहने लगा, अरी नादान लड़की, जाओ किसी चीज़ को हाथ लगा लो, बाज़ार बन्द हो रहा है। उसने न हील की न दलील की, हाथ उसके (बादशाह के) सिर पर रख दिया।

कहने लगी, राजा, अब तुम किसके हो ? कि तेरा। और ये मीना बाज़ार ? कि मेरा है। और अब किसका है ? तेरा। ''जे तू मेरा हो रहे तो सब जग मेरा होय।''

हम जुज्वी नज़र (अंशिक, सीमित दृष्टि) से देख रहे हैं। हम, माफ़ करना, बादशाह के लड़के हैं। क्यों मिट्टी में Grovel कर रहे हैं (अर्थात् रूल रहे हैं) ? Wake up होश में आओ। नहीं आओगे तो कब आओगे ? जिस समाज में तुम हो उसके श्रृंगार बनो, भूषण बनो उसके। जिस कालिज में पढ़ते हो उसकी इज्ज़त को बढ़ाओ, चलो ऐसे ही सही। और वह जो है वह सब एक है। वहां हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई के लेबलों का सवाल नहीं। बात समझे हो ? वाकई समझे हो तो फिर करो। सच्ची भूख होगी — There is food for the hungry and water for the thirsty (भूखे के लिए रोटी है, प्यासे के लिए पानी है)। Guru appears when the Chela is ready. सच्ची तलब का सवाल है। (इसके बाद पाठी ने एक शब्द गया जिसके बाद महाराज जी ने ये वचन कहे)।

आप भाइयों ने अभी महापुरूषों की, पूर्ण पुरूषों की, सत्पुरूषों की वाणी सुनी। सारी फिलासफ़ी को खोलकर रख दिया। जिनको भागों से ऐसा समय, पूंजी मिली, उनके लिए न करना महापाप है। जिनको नहीं मिली, उनके अन्तर शौक है तो मालिक खुद सामान करेगा। मगर ऐसे पुरूषों के बगैर गति नहीं, उनका नाम कुछ रख लो। वह एक ही ताकत है, दो नहीं। मैंने अमरीका में एक टाक दी थी, 25 दिसम्बर को कि क्राईस्ट पावर, गाड पावर, गुरू पावर सब एक है। हमारे हजूर फरमाते थे, एक बल्ब फ्जूज हो गया, दूसरा लग गया, दूसरा फ्यूज हो गया तीसरा लग गया। रोशनी वही है। वह गुरू एक है। मुख़तलिफ़ (विभिन्न) पोलों (मानव चोलों) पर Mainfest (प्रकट) होती है, वह गुरू की ताकत। उसको फिक्र है अपने बच्चों का। इसको समझा है, समझना भी काफी नहीं। करो, सच्ची तड़प होगी मालिक आप सामान करेगा। बाकी एक सवाल मेरे पास आया है कि जो तालीम यहां रूहानी सत्संग की ग्राउंड पर चली है ये उनकी (हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज) बख़शिश है। मैं तो Personally (स्वयं) इस हक़ में नहीं हूं — पहले-पहले तीन साल मैं स्टेशन पर नहीं रहा, ट्रेन में रहा हूं ताकि कोई मेरे पीछे भागे नहीं। क्रेडिट तो उसकी है। किसी और को क्रेडिट (श्रेय) देना उसको गिराना है माफ करना। अगर भूल में पड़ जाए, उसका हाथ सिर पर न रहे तो बड़ा मुश्किल है। ये उनकी बरकत है जो काम करती है। उनकी तालीम का असर है, मेरा नहीं। एक पाईप है। पानी आता है, मिल गया थोड़ा। बाकी वह हरेक से काम लेता है।

तो 6 फरवरी को ये दिन (जन्मदिवस) मनाते हैं हर साल। कई भाइयों की मरजी है कि

वहां देहरादून (मानव केन्द्र) में मनाया जाए — वह इसी की Furtherance (इससे सम्बद्ध है) में है। वह है रूहानी सत्संग ही। सेवा बीमारों की जो मुहताज हैं, बूढ़ों की या और। लोगों को कसौटी देने के लिए Man-Making (मानव निर्माण) तो आगे ही है, उसके साथ Man-Service (मानव सेवा) और Land Service (भू-सेवा) बढ़ाई जाए। वह (मानव केन्द्र) बहुत कुछ, रूपये में दस-बारह आने बन गया है, कुछ और बन रहा है। कोशिश है कि वह बन जाए तो वहीं किया जाए, वहां जन्मदिन मनाया जाए ? आप भाईयों की, जिनकी राय है कि वहां किया जाए, वो हाथ खड़ा करो। जिनकी नहीं राय न करो, जिनकी राय है जरूर करो (हाथ खड़ा करो)। (मर्दों, बीबियों से अलग-अलग करके पूछा तो ज्यादा लोागें की राय मानव केन्द्र में जन्मदिवस मनाने के हक में थी)। क्यों जी मैजारिटी (बहुमत) है ? वहां करने में एक दो मुश्किलें बता दूं। वहां ठण्डक है ज्यादा। जो आओ तो बिस्तरे साथ लेकर आओ। पहली बात। वहां लटकना पड़े तो लटक जाना। सेवा भी बड़ी, जो समाज में बरकत होती है, सेवा को ज़मीन पर लेटना मिल जाए तो भी एक बखशिश समझो। बाकी इन्तेजाम करना पड़ेगा। वहां सामान, रूपये में दस-बारह आने बन गया, बाकी बन रहा है। तो आप सबकी राय क्या हुई ? बोलो। फिर हाथ खड़ा करो (फिर बहुमत था)। तो अच्छा। 6 फरवरी को जन्मदिन वहां मनाया जाएगा (ये 2 जनवरी के सत्संग का निर्णय था)। मगर एक बात याद रखो। वही भाई वहां जाएं, सब घुमा घुमाकर जाओ। पहली बात। और कुछ कपड़ा गर्म साथ ले जाओ। और वहां सिवाय भजन के और कोई बात न हो। वहां मैंने जगह बना दी है भजन बैठने को भी, बड़े भारी तालाब के किनारे। वहां भजन भी करना, उस महापुरूष, पूर्ण पुरूष, सत्पुरूष की तालीम को — सिर्फ उसमें ये Addition की (ये चीज़ बढ़ाई) है कि सेवा का भाव हो। सेवा का भाव तो होता ही है आगे, मगर ताहम उनको जो बिल्कुल Indigent (असहाय, निर्धन) हैं उनकी। तो एक बात का जवाब हो गया। राजी हो ? नहीं हो तो अब कहो।

दूसरी बात, Black Out होने के सबब से जो सत्संग शाम को बन्द थे, 6 से 7 बजे वाले, उनका वक्त बदल दिया गया था कि वह दोपहर दो से तीन-चार बजे तक हों। अब ये सत्संग शाम के फिर उसी वक्त अर्थात् 6 से 7 बजे शाम को हुआ करेंगे। एक बात और, बड़ी जरूरी बात। मैं ये चाहता हूं, मेरा ये कई महीनों से ख्याल था, याद होगा आप भाईयों को, मैंने नाम मांगे थे कि जो सन्तों की तालीम को अच्छी तरह से समझना चाहते हैं, उनके Ambassador (दूत, संदेह वाहक) बनना चाहते हैं, जिनको हम कह सकें कि जाओ तुम फिर आओ (विभिन्न देशों में) हजूर की तालीम है, वो Training दी जाए। अब ये हो रहा है कोई असूल — जो सियाने आदमी हैं, वह तो ठीक कह रहे हैं, कई वैसे ही अपने ढकोसले

मिला देते हैं, ग़लत फहमी (भ्रम) पैदा कर रहे हैं। उसके लिए बाकायदा Training Class खोली जाए। ये मेरी दिली भावना है। हरेक महापुरूष के टाइम में उन्होंने ट्रेनिंग की है Disciples (शिष्यों) की। हजूर की तालीम के भी तो Ambassador चाहिये ना। तो जो पढ़े-लिखे हैं, आलिम हैं, फ़ाजिल हैं, वह खासकर, क्योंकि आजकल पढ़े-लिखों का भी जमाना है। जो दूसरे भी सत्संग करने वाले हैं, वह पहले तालीम को अच्छी तरह से समझ लें, ताकि जो एक सवाल करे वही दूसरा जवाब दे। इस बात के लिए Training मैं खास कर चाहता हूं, मेरे टाइम में ही हो जाए। उसके लिए ऐसे पुरूष, जो टाइम दे सके, उनके दिल में ख्वाहिश पक्की हो कि भई हम उसके Mouthpeice बन सकें, वह अपने नाम दो। हरेक जगह से दो। उसका Arrangement (प्रबन्ध) किया जाएगा Through Correspondence (पत्र-व्यवहार द्वारा)। वह कभी हाल में दो-तीन-चार Sittings होंगी। क्यों भाईयों, मंजूर है ? क्योंकि देखो, आज का ज़माना है। लोग मुझसे पूछते हैं, कोई बताओ। हजूर थे ना ! कोई कहता, कोई एक आदमी बताओ, किसके पास जाएं ? तो कहते, जाओ कृपालसिंह के पास, लाहौर जाकर। कोई फ़कीर आए, कोई आए। तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब है कि तालीम उनकी (हजूर की) है, उसको लोगों तक बंटाने (पहुंचाने) की जरूरत है। क्राइस्ट ने कहा, अपने Disciples (शिष्यों) को। क्या ? What you have learnt from the ear, go speak from the house-tops. जो कानों से सुनी है शिक्षा, उसका जिक्र, मकानों पर खड़े होकर लोगों को सुनाओ। बात समझे ? तो उस महापुरूष की तालीम, जो सबकी एक रही है, Basic (मूलभूत) तालीम, उसको करने के लिए हमें शौक चाहिए। ज़माने बदल गए Ambassadors are wanted. जिस पर बखशिश हो वही करेगा ना ! पर अपना शौक हो, तन से, मन से, धन से। तो अपने नाम With Particulars अपनी Back Life (पिछले जीवन के) भी दें, क्या रही है क्या नहीं। फिर बाकायदा Through Corresondence (भजन पर बैठाकर) भी उसका इन्तेजाम किया जाएगा। दो चार सियानों को छोड़कर बाकी हरेक अपनी कहानी मिला लेता है। इसकी बड़ी भारी जरूरत है। उम्मीद है आप पसन्द करेंगे, या न भी करें तो भी करना है। आप समझे, ''आप जपे अवरां नाम जपाए।'' उसकी बख़शिश मिली और कोई दूसरा आए इतना तो कहो कोई सत्गुरू है। घाट घाट फिरी कपड़ा धोने वाला कोई न मिला। यह तो कहो कोई धोबी है जो धो सकता है जिसको ये सेवा सौंपी गयी है। वह अपना नाम, Full particulars back life के, लिखकर दें। ऊपर Mark कर दें, खास, ताकि वह खोलकर अलहदा रख दी जाएं (एसी अर्जियां)। उसके लिये ट्रेनिंग की स्कीम, मेरे दिल में है, वह आपको पेश की जाए। तो जो भाई चाहें वे अपना नाम भेज दें। ❑

✦ ✧ ✦

MANAV KENDRA

DEHRADUN

PREAMBLE

Manav Kendra has been founded by His Holiness Sant Kirpal Singhji Maharaj in furtherance of the activities of Ruhani Satsang (which has been successfully upholding his spiritual teachings since the inauguration at the Sawan Ashram in 1951) to enable Man to develop physically and socially, ethically and spiritually, on the way to all round perfection.

AIMS & OBJECTS

The aim of Manav Kendra is to revive true contact with God and to bring about oneness amongst the followers of various faiths and to generate universal well-being.

These objectives will be achieved through Man-Making, Man-Service and Land-Service.

MAN-MAKING

Manav Kendra will help to :

- Make man perfect by harmonizing his inner spiritual contact with the glories of physical and mental life thereby enabling him to realize God.
- Make man truly righteous, by inculcating good thoughts,

good words and good deeds as ethical life is stepping-stone to spirituality.

- Awaken in man the spirit of compassion and love for all members of the family of God - man, animals, birds and all other creatures.

MAN - SERVICE

Manav Kendra will help to :

- Provide facilities for learning various Indian and foreign languages to develop better social contact, communication and understanding.
- Provide Father Homes for the physical, mental and spiritual well being of the aged people so that their old age can be lived comfortably and usefully.
- Establish Health Centres to serve the poor and the needy who are sick, irrespective of caste, creed or colour.

LAND - SERVICE

Manav Kendra will help to :

- Foster the growth of farming, agriculture and dairy (including cattle breeding) which will be undertaken on scientific lines.

THE MASTER

His Holiness Sant Kirpal Singhji was born on February 6, 1894. Soon after his academic career, he decided that to him 'God came first and world came next'. He met his Master, Hazur Baba Sawan Singhji physically, in 1924, although he was being guided internally by Hazur Maharaj Ji since 1917. After initiation he gave himself up heart and soul to the service of his Master. He retired from Government service in 1946 to devote himself exclusively to the Divine Mission entrusted to him by his Master, who cast off his earthly frame in 1948.

He founded the Ruhani Satsang in 1948 and built the Sawan Ashram, after his Master's name, at Delhi, in 1951 as a spiritual sanctuary where seekers of truth can get first-hand experience of spirituality without distinction of caste, creed, colour or nationality. He has initiated thousands of people both in the East and the West. He has written a number of books in English and Punjabi, on various aspects of spirituality, which have also been translated into Hindi, Urdu, French, German, Spanish, Greek and several other languages. He undertook three extensive world tours in 1955, 1963 and 1972 and they brought about a new spiritual awakening in the countries he visited.

He was unanimously elected President of the World Fellowship of Religions, presiding at its three conferences convened in 1957 (Delhi), 1960 (Calcutta) and 1965 (Delhi). He also presided at its fourth session held at Delhi, in February,

1970. In India and during his tours abroad, several hounours (including that of Grand Officer of the Order of St. John of Jerusalem, Knight of Malta) were conferred on him.

His Diamond Jubilee was celebrated on 6th February, 1969 — his 76th birthday — by leaders of different religious and soical organisations and the year was declared as the National Intergration year in his honour. His six word message on that occasion, 'Be Godd, Do Good, Be one,' which summed up his teachings formed the basis of 'Manav Kendra', sister organisation to the Ruhani Satsang, founded by him in 1970, which celebrates its third anniversary this year. The Master went on his third world tour in September 1972, returning to India in January 1973.

HIS MISSION

"To bring all children of God together on one common platform for better understanding and harmony".

HIS BASIC TEACHINGS ARE :

UNITY OF MAN

- We are already one as man. Man is the highest in all creation, next only to God. We are born in the same way and have the same inner and outer constructions.
- Man is embodied soul, a conscious entity and is of the same essence as God and as such we are members of one family and related to each other as brothers and sisters in God.

- He is controlled in the body by the same Power called by various names — God, Word, Naam, Ek-Onkar and many others.

- Right understanding that we are all one as man, as soul and as worshippers of God — the Controlling Power, will result in right thoughts, right speech and right actions and bring the Kingdom of God on earth.

KNOWLEDGE OF SELF AND OVERSELF

- One knows oneself (self knowledge) not by feelings or emotions or by drawing inferences as they are all subject to error, but by rising above out-going faculties and mind through practical self-analysis with the help of competent Master.

- One knows God by really knowing oneself as self alone can know the Overself. Like knows the like.

- Manbody is the True Temple of God. God resides in the temple of body made by him in the womb of the mother and not in temples made by the hand of man. Soul resides therein. God manifests there in the form of Light and Sound (Nad), which is seen with the Third or Single Eye and heard by the Inner Ear. These symbols of God are kept in the outer temples and churches, which are constructed after the True Temple, the man-body.

RELIGIONS AND GOD

God made man and man made religions. Religions came

into being after the Masters left the physical vesture so as to keep their teachings alive. We are man first, then the various labels that we bear on the body, viz., Hindus, Sikhs, Muslims, Christians, Buddhists, Jains etc. We can be truly called as such only when Light and Sound become manifest in us. To be born in a temple is a blessing, but not to rise above body consciousness (*i.e.,* to know self and God) is sinful. While remaining in our respective faiths we must rise above them and should become followers of true Faith — to love God and love all his creation.

HUMAN BIRTH : A GOLDEN OPPORTUNITY

We can know God only in man-body. To keep the body fit we must give it proper food, rest and clothing. If the body passes away without achieving this aim, we lose a golden opportunity for, 'what does it profit a man if he gains the possessions of the whole world and loses his own soul ?'

AN IDEAL MAN

Let man's physical body be in full blossom and his soul be full of glory, intoxicated with the Ringing Radiance of God, radiating love all around to the whole creation and wish 'Peace be unto all the world over under Thy Will, O' Lord'.

O hidden Sound vibrant in every atom,
O hidden Light shining in every creature,
O hidden Love embracing all, knitting in oneness.

✦ ✧ ✦